हिंदी-विभाग

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

(प्रदेश विधायिका एक्ट 12ए 1956 के तहत स्थापित)

('ए+ श्रेणी' राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रदत्त)

बी. एससी. (गृह-विज्ञान) हिंदी पाठ्यक्रम

सी. बी. सी. एस. (चयन-आधारित क्रेडिट पद्धति),

सत्र 2020-21 से लागू

कोर्स कोड	कोर्स का नाम	क्रेडिट	शिक्षण घंटे / प्रति सप्ताह	परीक्षा की स्कीम (अंक)			
				परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	कुल अंक	समय
सेमेस्टर - III							
BSc-HSc-HIN-AECC-301	**हिंदी भाषा और संप्रेषण** कौशल	**02**	**02**	**40**	**10**	**50**	1.30 घंटे
BSc-HSc-HIN-SEC-302	**संभाषण कला**	**02**	**02**	**40**	**10**	**50**	1.30 घंटे

BSc-HSc-HIN-AECC-301-हिंदी भाषा और संप्रेषण कौशल

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-50**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

संप्रेषण की विधियों और सिद्धांतों से परिचय के लिए। हिंदी भाषा में अपेक्षित संप्रेषण के लिए।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- हिंदी भाषा में अपेक्षित संप्रेषण कर पाएगा।
- संप्रेषण की विधियों को सीखकर हिंदी भाषा में मौखिक व लिखित रूप में अपेक्षित व प्रभावी संप्रेषण करने में सक्षम होगा।

परीक्षा संबधी निर्देश -

- **पाठ बोध -**निर्धारित रचनाओं से एक पाठांश तथा तत्संबंधी 4 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को उस पाठांश के आधार पर उत्तर देने होंगे। इसके लिए 8 अंक निर्धारित हैं।
- **समीक्षात्मक प्रश्न** - पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्य विषयों में से 10 प्रश्न दिए जायेंगे। विद्यार्थी को 5 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 7 वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- भाषा का स्वरुप एवं विशेषताएं, भाषा और मानव समाज का सांस्कृतिक विकास, हिंदी भाषा का विकास, हिंदी भाषा के विविध रूप (राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा) देवनागरी लिपि का मानकीकरण, हिंदी की संविधानिक स्थिति। शिक्षा-माध्यम के रूप में हिंदी (विज्ञान, वाणिज्य व मानविकी के क्षेत्र में)
- व्यावसायिक क्षेत्र की हिंदी, विज्ञापन व बाजार की हिंदी, मनोरंजन-उद्योग में हिंदी
- सृजनात्मक लेखन-प्रविधि (निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्त)
- हिन्दी शब्द रचना (उपसर्ग, प्रत्यय)
- हिंदी शब्द संपदा (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज)।
- वर्तनी शोधन।

पाठ बोध के लिए निर्धारित

- **संभाषण -** साहित्य, संस्कृति और शासन **-** महादेवी वर्मा
- **रेखाचित्र** - पुरुष और परमेश्वर - रामवृक्ष बेनीपुरी
- **यात्रा -** मैंने जापान में क्या देखा - भदंत आनंद कौशल्यायन
- **व्यंग्य -** आशा की अंत - बालमुकुंद गुप्त

सहायक पुस्तकें

- व्यावहारिक राजभाषा कोश - दिनेश चमोला
- प्रयोजनमूलक हिंदी - रघुनंदन प्रसाद शर्मा
- रचनात्मक लेखन - रमेश गौतम
- टेलीविजन लेखन - असगर वजाहत और प्रभात रंजन
- संचार भाषा हिंदी - सूर्यप्रसाद दीक्षित
- ब्रेक के बाद - सुधीश पचौरी
- जनसंचार माध्यम -भाषा और साहित्य - सुधीश पचौरी

BSc-HSc-HIN-SEC-302-संभाषण कला

क्रेडिट - 2 **कुल अंक-50**

समय-1.30 घंटे, **परीक्षा अंक - 40, आंतरिक मूल्यांकन - 10**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

संभाषण के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पहलुओं से परिचित करवाना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

- सावर्जनिक मंचों पर अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होगी।
- वैयक्तिक, सामाजिक व व्यावसायिक व्यवहार में संवाद क्षमता विकसित होगी।

परीक्षा संबधी निर्देश - प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त होगा।

- **समीक्षात्मक प्रश्न** - निर्धारित पाठ्यक्रम में से 4 समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। विद्यार्थी को 2 का उत्तर देना होगा। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।
- **लघुत्तरी प्रश्न -**निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में से 4 लघुत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थी को इनमें से 2 के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -** निर्धारित समस्त पाठ्यक्रम में 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगें। विद्यार्थी को प्रत्येक का उत्तर देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषयः

- संभाषण का अर्थ, स्वरूप एवं प्रमुख घटक
- संभाषण के विभिन्न रूप-वार्तालाप, व्याख्यान, वाद-विवाद, एकालाप, अवाचिक अभिव्यक्ति, जन संबोधन।
- जन सम्पर्क में वाककला की उपयोगिता
- संभाषण कला के प्रमुख उपादानः भाषा ज्ञान, मानक उच्चारण, सटीक प्रस्तुति, अन्तराल ध्वनि (वाल्यूम),वेग, लहजा (एक्सेण्ट)।
- संभाषण कला के विभिन्न रूपः उदघोषणा कला (अनाउन्सेमेंट), आंखों देखा हाल (कमेन्ट्री), संचालन (एंकरिंग), वाचन कला, समाचार वाचन (रेडियो, टी. वी.), मंचीय वाचन (कविता, कहानी, व्यंग्य आदि)।
- वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं समूह संवाद।
- लोक प्रशासन, जनसम्पर्क एवं विपणन के विकास में संभाषण कला का योगदान।
- संवादी भाषा (कनवर्सेशनल लैंग्वेज) के रूप में हिन्दी की भाषिक संवेदना की विवेचना।

सहायक पुस्तकें

भाषण कला - महेश शर्मा
अच्छी हिंदीः संभाषण और लेखन - तेजपाल चौधरी